

श्रीमते रामानुजाय नमः ।

श्रीमत्प्राङ्कुश मुनये नमः ।

श्रीमद्भागवत महापुराण ग्रंथ का स्वरूप

वर्तमान में उपलब्ध श्रीमद्भागवत ग्रंथ की कथा का स्वरूप एवं प्रारूप श्रीसूत जी द्वारा संग्रहित एवं संकलित है। श्रीवेदव्यास जी द्वारा विरचित श्रीमद्भागवत महापुराण प्रथम बार श्रीशुकदेव जी के मुखारविन्द से राजा परीक्षित को सुनाया गया। उस समय समस्त श्रेष्ठमुनिजनों के साथ श्रीसूत जी भी वहाँ उपस्थित थे और उनको भी भागवत कथा सुनने का सुअवसर मिला। मानव कल्याण निमित्त भगवान श्रीकृष्ण की लीलावतार सम्बन्धित शौनकादि मुनिजनों के प्रश्न के समाधान में उन्होंने उसी कथा को कलिकाल के प्रारम्भ में अपनी बुद्धि एवं मति के अनुसार प्रकट किया। कथा का प्रवाह एवं विषयवस्तु श्रीशुकदेव जी की कथा का यथासाध्य रूप ही है जो प्रथम स्कन्ध के तृतीय अध्याय 1 | 3 | 40 से 45 तक के निम्नांकित श्लोकों से स्पष्ट होता है।

सूत उवाच

इदं भागवतं नाम पुराणं ब्रह्मसम्मितम् । उत्तमश्लोकचरितं चकार भगवानृषिः । । भा 1 | 3 | 40

निःश्रेयसाय लोकस्य धन्यं स्वस्त्ययनं महत् । ततः संग्राह्यमास सुतमात्मवतां वरम् । । 41

सर्ववेदेतिहासानां सारं सारं समुद्धृतम् । स तु संश्रावयामास महाराजं परीक्षितम् । । 42

प्रायोपविष्टं गङ्गायां परीतं परमर्षिभिः । कृष्णे स्वधामोपगते धर्मज्ञानादिभिः सह । । 43

कलौ नष्टदृशामेष पुराणार्कोऽधुनोदितः । तत्र कीर्तयतो विप्रा विप्रर्षेर्भूरितेजसः । । 44

अहं चाध्यगमं तत्र निविष्टस्तदनुग्रहात् । सोऽहं वः श्रावयिष्यामि यथाधीतं यथामति । । 45

भागवत के 9 वें स्कन्ध के 22 वें अध्याय के श्लोक 21 से 23 में श्रीशुकदेव जी ने उल्लेख किया है कि उनके पिता वेदव्यास जी ने अपने अन्य शिष्यों को छोड़ उन्हें ही रहस्यपूर्ण भागवत पढ़ाया।

..... । यस्यां पराशरात् साक्षादवतीर्णो हरेः कला । भा | 9 | 22 | 21

वेदगुप्तो मुनिः कृष्णो यतोऽहमिदमध्यगाम् । हित्वा स्वशिष्यान् पैलादीन् भगवान् बादरायणः । । 22

मह्यं पुत्राय शान्ताय परं गुह्यमिदं जगौ । । 23

स्कन्ध 2 अध्याय 1 श्लोक 8 से 10 में श्रीशुकदेवजी ने राजा परीक्षित को यह स्पष्ट किया है कि अपने पिता व्यासजी से प्राप्त भागवत की कथा अब वे राजा को सुनायेंगे क्योंकि राजा भगवान कृष्ण के परम भक्त हैं तथा इस कथा से भगवान के प्रति उनकी श्रद्धा दृढ़ से दृढ़तर हो जायेगी।

इदं भागवतं नाम पुराणं ब्रह्मसम्मितम् । अधीतवान् द्वापरादौ पितुर्द्वैपायनादहम् । । भा 2 । 1 । 8

परिनिष्ठितोऽपि नैर्गुण्य उत्तमश्लोकलीलया । गृहीतचेता राजर्षे आख्यानं यदधीतवान् । । 9

तदहं तेऽभिधास्यामि महापौरुषिको भवान् । यस्य श्रद्धतामाशु स्यान्मुकुन्दे मतिः सती । । 10

स्कन्ध 1 अध्याय 19 श्लोक 8 से 12 में गंगा किनारे राजा परीक्षित के पास मुनियों के एकत्र होने का उल्लेख है तथा समागत प्रमुख मुनियों के नाम भी ध्यातव्य हैं जिसमें अन्य मुनियों के अतिरिक्त श्रीशुकदेव जी के पिता व्यास जी भी वर्तमान थे।

श्लोक 21 में मुनियों द्वारा राजा को उनके महाप्रयाण की अवधि तक वहीं उनके पास रहने के आश्वासन का उल्लेख है जिससे यह आभास मिलता है कि व्यास जी भागवत कथा के मूल प्रवर्तक होने के बाद भी अपने वरद पुत्र से उस कथा को सुनते रहे।

तत्रोपजग्मुर्भुवनं पुनाना महानुभावा मुनयः सशिष्याः ।

प्रायेण तीर्थाभिगमापदेशैः स्वयं हि तीर्थानि पुनन्ति सन्तः । । भा 1 । 19 । 8

राजा परीक्षित के पास तीर्थों को पवित्र करनेवाले ऋषि मुनि अपने शिष्यों के साथ पधारे।

अत्रिः वसिष्ठः च्यवनः शरद्वान अरिष्टनेमि भृगुः अंगिराः च ।

पराशरो गाधिसुतो अथ राम उत्तथ्य इन्द्रप्रमद ईध्ववाहु । । 9

मेधातिथिः देवल आर्षिषेणो भारद्वाजो गौतमः पिप्लादः ।

मैत्रेय और्वः कवषः कुम्भयोनिः द्वैपायनो भगवान् नारदः च । । 10

अत्रि वसिष्ठ आदि के साथ अगस्त्य वेदव्यास तथा नारदजी भी पधारे।

अन्ये च देवर्षि ब्रह्मऋषिवर्याः राजर्षिवर्याः अरूणादयः च ।
नाना आर्षेय प्रवरान् समेतान् अभियर्च्य राजाशीर्षा ववन्दे । । 11

राजा परीक्षित ने सभी समागतजनों का शिर झुका कर स्वागत किया । तक्षक के विष की चिन्ता से निश्चिन्त एवं निर्भय राजा ने सभी मुनियों से भगवान विष्णु की गाथा गाने का निवेदन किया ।
तं मा उपयातं प्रतियन्तु विप्रा कुहकः तक्षकः वा दशतु अलं गायत विष्णुगाथाः । । भा 1 | 19 | 15 । ।

भगवान में राजा की दृढ़ भक्ति की प्रशंसा करते हुए मुनियों ने उन्हें आश्वासन दिया कि जब तक राजा शरीर छोड़कर परमधाम को नहीं चले जाते वे सब वहाँ उपस्थित रहते हुए भगवान की गाथा गाते रहेंगे । “सर्वेवयं तावत् इह आस्महे अथ कलेवरं यावत् असौ विहाय । लोकं परम् विरजस्कं विशोकं यास्यति अयं भागवत प्रधानः । । भा 1 | 19 | 21 । ।”

जब राजा मुनिजनों से अपनी जिज्ञासा निवेदन करने लगे तब सहसा वहाँ श्रीव्यासजी के वरदपुत्र सुन्दर सुकुमार सोलह वर्षीय श्रीशुकदेव मुनि का आगमन हुआ । अपने आसन से उठकर सभी मुनिगणों ने उनका स्वागत किया ।

तत्र अभवत् भगवान व्यासपुत्रो यद्र इच्छया गाम् अटमानः अनपेक्षः ।
अलक्ष्य लिंगः निजलाभ तुष्टो वृतः च बालैः अवधूत वेषः । । 1 | 19 | 25
तं द्वयअष्ट वर्ष सुकुमार पाद कर उरु वाहु अंस कपोल गात्रम् ।
चारु आयत अक्ष उन्नस तुल्यकर्ण सुभु आननं कम्बु सुजातकण्ठम् । । 26 । ।

राजा से समादृत श्रीशुकदेवजी ने ऊँचा आसन ग्रहण किया तथा नक्षत्रों से घिरे चन्द्रमा की भाँति शोभायमान होने लगे । “ससंवृतः तत्र महान् महीयसां ब्रह्मर्षि राजर्षि देवर्षिसघैः । व्यरोचत् अलं भगवान यथा इन्दुग्रह ऋक्ष तारा निकरैः परीतः । । 1 | 19 | 30 । ।”

राजा ने श्रीशुकदेव मुनि से संपूर्ण मानव समुदाय के साथ साथ विशेष रूप से शीघ्र मरणासन्न व्यक्ति के कल्याण हेतु कर्तव्य के बारे में जानकारी हेतु अपनी जिज्ञासा प्रकट की । “अतः पृच्छामि संसिद्धिं योगिनां परमं गुरुम् । पुरुषस्य इह यत् कार्यं प्रियमाणस्य सर्वथा । भा 1 | 19 | 37 । ।”

इन दो प्रश्नों के समाधान हेतु श्रीशुकदेवजी ने भागवत कथा का शुभारम्भ किया । प्रश्नों एवं जिज्ञासाओं के समाधान के साथ कथा सम्पूर्ण स्कन्ध 2 से स्कन्ध 12 के अध्याय 5 तक चली । भगवद् ज्ञानहेतु और अन्य जानकारी के लिये राजा से श्रीशुकदेवजी ने जब पूछा “एतत् ते कथितं तात यत् आत्मापृष्टवान् नृप ।

हरेः विश्वात्मनः चेष्टां किं भूयः श्रोतुम् इच्छसि । 12 । 5 । 13 । । ” तब राजा ने उनके चरणारविन्द में बद्धांजलि हो अपने को उनके परम अनुग्रहपात्र बताते हुए अपनी आसन्न मृत्यु से सम्पूर्ण निर्भयता का संकेत दिया ।

सिद्धः अस्मि अनुगृहीतः अस्मि भवता करुणात्मना ।
श्रावितः यत् च मे साक्षात् अनादिनिधनः हरिः । 12 । 6 । 2 ।
भगवन् तक्षक आदिभ्यः मृत्युभ्यः न बिभेमि अहम् ।
प्रविष्टः ब्रह्मनिर्वाणं अभयं दर्शितं त्वया । । 12 । 6 । 5 ।
अज्ञानं च निरस्तं मे ज्ञानविज्ञान निष्ठया
भवता दर्शितं क्षेमं परं भगवतः पदम् । । 12 । 6 । 7 ।

सूतजी ने कहा कि इसके उपरान्त राजा ने मुनियों के साथ श्रीशुकदेवजी की पूजा की तथा तदुपरान्त श्रीशुकदेव जी वहाँ से शीघ्र ही प्रस्थान कर गये ।

सूत उवाच
इति उक्तः तं अनुज्ञाप्य भगवान् बादरायणिः ।
जगाम भिक्षुभिः साकं नरदेवेन पूजितः । । 12 । 6 । 8 । ।

इससे यह ज्ञात होता है कि श्रीशुकदेवजी के जाने के समय सम्पूर्ण कथा को सुनते हुए समस्त मुनिगण वहाँ उपस्थित थे ।

उपर्युक्त सन्दर्भ के विहंगावलोकन से यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान भागवतपुराण की कथा शौनकादि ऋषियों की जिज्ञासा शांतिहेतु पूछे गये प्रश्नों के समाधान में श्रीसूतजी द्वारा प्रस्तुत है । इसका अनुमोदन स्वयं श्रीव्यासजी ने किया है जो स्कन्ध 1 अध्याय 2 तथा अध्याय 4 के श्लोक 1 से स्पष्ट होता है ।

व्यास उवाच
इति सम्प्रश्न संहृष्टः विप्राणां रौमहर्षणिः ।
प्रतिपूज्य वचः तेषां प्रवक्तुं उपचक्रमे । । भा 1 । 2 । 1 ।
इति ब्रुवाणं संस्तूय मुनीनां दीर्घसत्रिणाम् ।
वृद्धः कुलपतिः सूतं बहु ऋचः शौनको अब्रवीत् । भा 1 । 4 । 1 ।

वास्तव में श्रीशुकदेव जी के मुखारविन्द से निकली हुई भागवत कथा स्कन्ध 2 से स्कन्ध 12 के अध्याय 5 तक ही है । श्रीसूत जी ने भागवत कथा की पूर्व पृष्ठभूमि की सम्यक जानकारी हेतु ही संपूर्ण स्कन्ध 1 की रचना की । स्कन्ध 12 अध्याय 5 के बाद वाले सभी अध्याय श्रीसूत जी द्वारा

शौनकादि के अन्य प्रश्नों के समाधान हेतु विरचित हैं। स्कन्ध 12 अध्याय 6 में व्यास जी द्वारा वेद एवं पुराणों को विभाजित कर अपने शिष्यों को सुपुर्त करने का वृत्तान्त है। अध्याय 7 श्लोक 6 में श्रीसूत जी ने अपने पिता रोमहर्षण जी के प्रधान छः शिष्यों के समवेत उत्तराधिकारी के रूप में स्वयं को पुराणों का संरक्षक बताया। शौनकादि के प्रश्न पर स्कन्ध 12 अध्याय 8 से 10 तक मार्कण्डेय मुनि का जीवनवृत्त वर्णित है। श्रीसूत जी ने अध्याय 11 में नारायण के अलौकिक स्वरूप को उद्भासित किया है। इसके श्लोक 21 में उन्होंने पाञ्चरात्र प्रतिपादित भगवान के चतुर्व्यूह के स्वरूप का उल्लेख किया है “वासुदेवः संकर्षणः प्रद्युम्नः पुरुषः स्वयं अनिरुद्ध इति ब्रह्मण मूर्तिव्यूहः अभिधीयते।” श्रीसूत जी ने स्कन्ध 12 के अध्याय 12 में सम्पूर्ण ग्रन्थ का सार संक्षेप संकलित किया है तथा अध्याय 13 से ग्रन्थ का समापन करते हुए इसके श्लोक 4 से 9 तक समस्त अठारह पुराणों के श्लोक संख्या को परिगणित किया है। इसके श्लोक 10 में भगवान द्वारा भागवत के सृजन कर ब्रह्मा को बताने तथा श्लोक 19 में ब्रह्मा से नारद तथा नारद से व्यासदेव एवं व्यासदेव से श्रीशुकदेव जी को और तत्पश्चात् राजा परीक्षित समेत अन्य मुनियों तक इसके प्रसारण शृङ्खला की सम्पुष्टि की है।

इदं भगवता पूर्व ब्रह्मणे नाभिपंकजे स्थिताय
भवभीताय कारुण्यात् सम्प्रकाशितम्। 12।13।10।

कस्मै येन विभासितः अयम् अतुलः ज्ञान प्रदीपः पुरा
तत् रूपेण च नारदाय मुनये कृष्णाय तत् रूपिणा
योगिन्द्राय तत् आत्मना अथ भगवत्प्राताय कारुण्यतः
तत् शुद्धं विमलं विशोकं अमृतं सत्यं परं धीमहि।। 12।13।19।

श्रीसूत जी ने ग्रंथ का उपसंहार नाम संकीर्तन को महिमान्वित करते हुए किया है।

नामसंकीर्तनं यस्य सर्व पाप प्रणाशनम्
प्रणामः दुःखशमनः तं नमामि हरिं परम्।। 12।13।23।